THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

उपचार के लिए दिव्य प्रेम की पुकार
Divine Love's call to healing

Author – David C. Kennedy

Christian Science Sentinel Volume 116, Issue 29 & 30, July 21 & 28, 2014

रात को सोते हुए और एक बुरा सपना देखते हुए एक बच्चा शायद अपनी माँ के बारे में सचेत न हो जो उसके पलंग पर उसे जगाने के लिए धीरे से हिला रही है। उसी तरह, जब हम बीमारी, रोग, या अन्य कठिनाईयों के साथ संघर्ष कर रहे होते हैं, शायद हम सचेत न हो कि हमारा **माता–पिता परमेश्वर**, अनन्त दिव्य **प्रेम**, बिल्कुल हमारे साथ है। **प्रेम** सोच में सहजता से कार्यरत है, हमें **प्रेम** में हमारी वर्तमान सुरक्षा और समन्वय तक–एक आध्यात्मिक जागरूकता तक जगाते हुए जो उपचार लाती है।

शुरू से अंत तक बाइबल में, मानवजाति के दुखों का उपचार करने के लिए **परमेश्वर** के उद्देश्य और आश्वासन का प्रमाण दोहराया गया है। क्राइस्ट जीसस ने इस आश्वासन की परिपूर्णता को दर्शाया। उन्होंने प्रत्यक्षीकृत किया कि **परमेश्वर** का प्रेम कंधे पर केवल दिलासा देने वाला एक हाथ नहीं है अपितु **आत्मा**, पवित्र आत्मा, या सांत्वनादाता की एकदम निकट शक्ति और उपस्थिति है। दिव्य **आत्मा** कष्ट को नष्ट कर देती है इस डर का विनाश करके कि हम फिर से सम्पूर्णता में या **परमेश्वर** की अच्छी कृपाओं में वापिस जाने के लिए अपना मार्ग बनाने में संघर्ष करते हुए दोषपूर्ण भौतिक नश्वर हैं।

जब 38 वर्षों से अपंग एक मानव ने सफाई दी कि वह अभी तक स्वस्थ क्यों नहीं हुआ, जीसस ने उस निराशाजनक सोच को पार किया तथा उसे उठने और चलने के लिए कहा। और उस मानव ने तुरंत वही किया (यूहन्ना 5:2–9 देखो)। जीसस को उसका बोध हुआ होगा जो उस मानव को नहीं हुआ–**परमेश्वर** के एक बच्चे की तरह मानव की शाश्वत पूर्णता का। उनके लिए **परमेश्वर** के प्रेम के प्रकाश में और रोग के स्वपन को तोड़ने के लिए उस प्रेम की योग्यता में उन परिस्थितियों की कोई महत्ता या वास्तविकता नहीं थी जो उसके उपचार में बाधा की तरह प्रतीत हो रही थी।

संभवतः हम सोचते हैं कि हमारे कष्ट के कुछ कारण होते हैं–कि स्वस्थ होने के लिए हमारे साथ कुछ तो घटित होना होगा, कि हमें सबसे पहले किसी तरह स्वयं को सही करना होगा, मानसिक रूप से और आध्यात्मिक रूप से। हम शायद महसूस करते हों जैसे कि हम बीमार नश्वर बेहतर बनने की कोशिश कर रहे हैं, अधिक आध्यात्मिक मन वाले नश्वर। हम शायद उपचार के लिए अयोग्य भी महसूस करते हों।

क्राइस्ट–**प्रेम** का दिव्य प्रकटीकरण, हमें यह सत्य बताता हुआ कि हम कौन हैं–हमारे बारे में इस झूठे नज़रिये का सफाया कर देता है। क्राइस्ट हमें स्नेहपूर्वक दर्शाता है कि हम आरम्भ से ही नश्वर नहीं हैं, और इसलिए रोग या कष्ट कभी भी उसका हिस्सा नहीं थे जो हम हैं। हमारा उद्गम **आत्मा** है। हमारी विरासत

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

आत्मा का समन्वय है। हमारे व्यक्तित्व को हमारी माता, अनन्त अन्तश्चेतना द्वारा स्थापित किया जाता है और सदा–सर्वदा उसकी देखरेख की जाती है, तथा हम प्रतिबिम्बित करते हैं–हम बाहर चित्रित करते हैं–अन्तश्चेतना की सम्पूर्णता को।

कई वर्ष पहले एक स्त्री जो कि बिस्तर पर थी, चलने में असक्षम, इन सत्यों को समझने से वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गई। क्रिश्चियन साँयस उपचारक ने प्रार्थना की थी यह समझने और पुष्टि करने के लिए कि उस स्त्री का सच्चा अस्तित्व आत्मा द्वारा रचित था न कि भौतिकता द्वारा। असक्षम मांसपेशियों या अंगों के आगे असहाय होने की बजाए, वह उस समय भी सदा–क्रियाशील दिव्य जीवन की प्रिय अभिव्यक्ति थी। वह अन्तश्चेतना की पूर्णता को, अन्तश्चेतना की समन्वित लय और क्रिया को प्रकट करती थी। दिव्य मन उसी समय अपनी सम्पूर्ण क्रिया और अस्तित्व को उस में अभिव्यक्त कर रहा था। और क्योंकि यह मन उसका मन भी था, वह स्त्री अपनी स्वयं की सम्पूर्णता को जान पाई।

दिव्य प्रेम हम में से प्रत्येक को और सारी मानवजाति को पुकारता है, परमेश्वर के बच्चों की तरह अपनी आज़ादी को खोजने के लिए।

प्रार्थना करने पर उपचारक ने इन सत्यों की वास्तविकता और शक्ति को महसूस किया। उसने यह भी देखा कि आध्यात्मिक सत्य कानून था–अस्तित्व की दिव्य साँयस–स्त्री की चेतना और अनुभव में कार्यान्वित हाते हुए। वह दो दिनों में स्वस्थ हो गई।

कभी–कभी एक उपचार शायद आध्यात्मिक प्रगति, एक आध्यात्मिक पुनर्जन्म की मांग करता है। चाहे हम इस प्रेरित रास्ते पर चलते हैं, फिर भी हम परमेश्वर के साथ एक होते हैं। हम आत्मा द्वारा संचालित होते हैं, प्रेम द्वारा पोषित होते हैं और सर्वविद्यमान जीवन में लिप्त होते हैं। हम परमेश्वर के साथ अपने शाश्वत संबंध से बाहर नहीं जा सकते, जिसका प्रेम मार्ग में हर कदम पर हमारी ज़रूरतें पूरी करने के लिए सदा–उपस्थित और कार्यरत है।

मेरी बेकर एडी ने, जिन्होंने क्रिश्चियन साँयस की खोज और स्थापना की, उपचार के लिए हमें पुकारते हुए क्राइस्ट की समयरहित उपस्थिति को महसूस किया। एक कविता में उन्होंने लिखा:

> तुमने मेरे मुक्तिदाता को देखा? तुमने हर्षित आवाज़ सुनी?
> तुमने वचन की शक्ति को महसूस किया?
> वह सत्य था जिसने हमें मुक्त किया,
> तथा तुमने और मैंने उसे पाया था,
> अपने दाता के जीवन और प्रेम में।
>
> (Poems, पृष्ठ. 75)

दिव्य प्रेम हम में से प्रत्येक को और सारी मानवजाति को पुकारता है, परमेश्वर के बच्चों की तरह अपनी आज़ादी को खोजने के लिए। न हम कभी अयोग्य होते हैं। न हमें कभी परमेश्वर से परे धकेल दिया जाता है, दूर कर दिया जाता है। परमेश्वर का प्रेम ऐसे डर पर काबू पा लेता है, स्वयं की एक भौतिक समझ के भ्रम के पार चला जाता है, (और हमारे समझ) परमेश्वर के साथ हमारी अटूट, उल्लासपूर्ण एकता को प्रकट करता है।

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.